يَلْبَسُونَ مِنْ سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٥٣﴾ كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم

पहनेंगे करेब और क़नादीज़[59] आमने सामने[60] यूंही है और हम ने उन्हें बियाह दिया

بِحُورٍ عِينٍ ﴿٥٤﴾ يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾ لَا يَذُوقُونَ

निहायत सियाह और रोशन बड़ी आंखों वालियों से उस में हर क़िस्म का मेवा मांगेंगे[61] अम्न व अमान से[62] उस में पहली

فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾ فَضْلًا

मौत के सिवा[63] फिर मौत न चखेंगे और अल्लाह ने उन्हें आग के अ़ज़ाब से बचा लिया[64] तुम्हारे

مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٧﴾ فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ

रब के फ़ज़्ल से येही बड़ी काम्याबी है तो हम ने इस कुरआन को तुम्हारी ज़बान में[65] आसान किया कि

يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٨﴾ فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿٥٩﴾ ع ٢/١٢

वोह समझें[66] तो तुम इन्तिज़ार करो[67] वोह भी किसी इन्तिज़ार में हैं[68]

اٰياتها ٣٧ ﴿٤٥﴾ سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ ﴿٦٥﴾ ركوعاتها ٤

सूरए जासियह मक्किय्या है, इस में सैंतीस आयतें और चार रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेह्रबान रहम वाला[1]

حم ﴿١﴾ تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿٢﴾ إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ

किताब का उतारना है अल्लाह इ़ज़्ज़त व ह़िक्मत वाले की त़रफ़ से बेशक आस्मानों

وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٣﴾ وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَابَّةٍ

और ज़मीन में निशानियां हैं ईमान वालों के लिये[2] और तुम्हारी पैदाइश में[3] और जो जो जानवर वोह फैलाता है

59 : या'नी रेशम के बारीक व दबीज़ लिबास। 60 : कि किसी की पुश्त किसी की त़रफ़ न हो। 61 : या'नी जन्नत में अपने जन्नती ख़ादिमों को मेवे ह़ाज़िर करने का हुक्म देंगे 62 : कि किसी क़िस्म का अन्देशा ही न होगा न मेवे के कम होने का न ख़त्म हो जाने का न ज़रर करने का न और कोई। 63 : जो दुन्या में हो चुकी 64 : उस से नजात अ़त़ा फ़रमाई। 65 : या'नी अ़रबी में 66 : और नसीह़त क़बूल करें और ईमान लाएं, लेकिन लाएंगे नहीं। 67 : उन के हलाक व अ़ज़ाब का। 68 : तुम्हारी मौत के। (قِيلَ هٰذِهِ الْاٰيَةُ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ السَّيْفِ) 1 : येह सूरए जासियह है, इस का नाम सूरए शरीअ़ह भी है, येह सूरत मक्किय्या है सिवाए आयत ''قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا'' के। इस सूरत में चार रुकूअ़, सैंतीस आयतें, चार सो अठासी कलिमे, दो हज़ार एक सो इक्यानवे ह़र्फ़ हैं। 2 : अल्लाह तआ़ला की कुदरत और उस की वह़दानिय्यत पर दलालत करने वाली। 3 : या'नी तुम्हारी पैदाइश में भी उस की कुदरत व ह़िक्मत की निशानियां हैं कि नुत़्फ़े को ख़ून बनाता है, ख़ून को बस्ता (जम्अ़ हुवा) करता है, ख़ूने बस्ता को गोश्त पारा (गोश्त का टुकड़ा) यहां तक कि पूरा इन्सान बना देता है।

www.dawateislami.net

اٰیٰتٌ لِّقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ وَ اخْتِلَافِ الَّیْلِ وَ النَّهَارِ وَ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
इन में निशानियां हैं यक़ीन वालों के लिये और रात और दिन की तब्दीलियों में[4] और इस में कि **अल्लाह**

مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَاَحْیَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَ تَصْرِیْفِ
ने आस्मान से रोज़ी का सबब मींह उतारा तो उस से ज़मीन को उस के मरे पीछे ज़िन्दा किया और हवाओं की

الرِّیٰحِ اٰیٰتٌ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ ﴿۵﴾ تِلْكَ اٰیٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَیْكَ
गर्दिश में[5] निशानियां हैं अक़्ल मन्दों के लिये यह **अल्लाह** की आयतें हैं कि हम तुम पर हक़ के साथ

بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَ اٰیٰتِهٖ یُؤْمِنُوْنَ ﴿۶﴾ وَیْلٌ لِّكُلِّ
पढ़ते हैं फिर **अल्लाह** और उस की आयतों को छोड़ कर कौन सी बात पर ईमान लाएंगे ख़राबी है हर बड़े

اَفَّاكٍ اَثِیْمٍ ﴿۷﴾ یَّسْمَعُ اٰیٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَیْهِ ثُمَّ یُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ
बोहतान हाए गुनहगार के लिये[6] **अल्लाह** की आयतों को सुनता है कि उस पर पढ़ी जाती हैं फिर हट पर जमता है[7] गुरूर करता[8] गोया

یَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۸﴾ وَ اِذَا عَلِمَ مِنْ اٰیٰتِنَا شَیْـًٔا اتَّخَذَهَا
उन्हें सुना ही नहीं तो उसे ख़ुश ख़बरी सुनाओ दर्दनाक अ़ज़ाब की और जब हमारी आयतों में से किसी पर इत्तिलाअ़ पाए उस की

هُزُوًا ؕ اُولٰٓىٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِیْنٌ ﴿۹﴾ مِنْ وَّرَآىٕهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَ لَا یُغْنِیْ
हंसी बनाता है उन के लिये ख़्वारी का अ़ज़ाब उन के पीछे जहन्नम है[9] और उन्हें कुछ काम

عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَیْـًٔا وَّ لَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِیَآءَ ۚ وَ لَهُمْ
न देगा उन का कमाया हुवा[10] और न वोह जो **अल्लाह** के सिवा हिमायती ठहरा रखे थे[11] और उन के लिये

عَذَابٌ عَظِیْمٌ ﴿۱۰﴾ هٰذَا هُدًى ۚ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ
बड़ा अ़ज़ाब है यह[12] राह दिखाना है और जिन्हों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिये

ع عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِیْمٌ ﴿۱۱﴾ اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ
दर्दनाक अ़ज़ाब में से सख़्त तर अ़ज़ाब है **अल्लाह** है जिस ने तुम्हारे बस में दरिया कर दिया कि उस में उस के

4 : कि कभी घटते हैं कभी बढ़ते हैं और एक जाता है दूसरा आता है। **5 :** कि कभी गर्म चलती हैं कभी सर्द कभी जुनूबी कभी शिमाली कभी शर्क़ी कभी ग़र्बी। **6 :** या'नी नज़्र बिन हारिस के लिये। **शाने नुज़ूल :** कहा गया है कि येह आयत नज़्र बिन हारिस के हक़ में नाज़िल हुई जो अ़जम के क़िस्से कहानियां सुना कर लोगों को क़ुरआने पाक सुनने से रोकता था और आयत हर ऐसे शख़्स के लिये आ़म है जो दीन को ज़रर पहुंचाए और ईमान लाने और क़ुरआन सुनने से तकब्बुर करे। **7 :** या'नी अपने कुफ़्र पर। **8 :** ईमान लाने से। **9 :** या'नी बा'दे मौत उन का अन्जामे कार और मआल (ठिकाना) दोज़ख़ है। **10 :** माल जिस पर वोह बहुत नाज़ां हैं। **11 :** या'नी बुत जिन को पूजा करते थे। **12 :** क़ुरआन शरीफ़।

www.dawateislami.net

فِيْهِ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿١٢﴾ ج وَسَخَّرَ لَكُمْ

हुक्म से कश्तियां चलें और इस लिये कि उस का फ़ज़्ल तलाश करो[13] और इस लिये कि हक़ मानो[14] और तुम्हारे लिये काम में लगाए

مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ

जो कुछ आस्मानों में हैं[15] और जो कुछ ज़मीन में[16] अपने हुक्म से बेशक इस में निशानियां हैं

يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿١٣﴾ قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ اَيَّامَ

सोचने वालों के लिये ईमान वालों से फ़रमाओ दर गुज़रें उन से जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं

اللّٰهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ﴿١٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ج

रखते[17] ताकि अल्लाह एक क़ौम को उस की कमाई का बदला दे[18] जो भला काम करे तो अपने लिये

وَمَنْ اَسَآءَ فَعَلَيْهَا ۫ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿١٥﴾ وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْۤ

और बुरा करे तो अपने बुरे को[19] फिर अपने रब की त़रफ़ फेरे जाओगे[20] और बेशक हम ने बनी

اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَ

इसराईल को किताब[21] और हुकूमत और नुबुव्वत अ़त़ा फ़रमाई[22] और हम ने उन्हें सुथरी रोज़ियां दीं[23] और

فَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦﴾ ج وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ج فَمَا اخْتَلَفُوْۤا

उन्हें उन के ज़माने वालों पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हम ने उन्हें इस काम की[24] रोशन दलीलें दीं तो उन्हों ने इख़्तिलाफ़ न किया[25]

---

13 : बह़री सफ़रों से और तिजारतों से और ग़व्वासी (ग़ोत़ा ख़ोरी) करने और मोती वग़ैरा निकालने से। **14 :** उस के ने'मतो करम और फ़ज़्लो एह़सान का। **15 :** सूरज चांद सितारे वग़ैरा। **16 :** चौपाए दरख़्त नहरें वग़ैरा। **17 :** जो दिन कि उस ने मोमिनीन की मदद के लिये मुक़र्रर फ़रमाए या "अल्लाह तआ़ला के दिनों" से वोह वक़ाएअ़ (वाक़िआ़त) मुराद हैं जिन में वोह अपने दुश्मनों को गिरिफ़्तार करता है, बहर ह़ाल इन उम्मीद न रखने वालों से मुराद कुफ़्फ़ार हैं और मा'ना येह हैं कि कुफ़्फ़ार से जो ईज़ा पहुंचे और उन के कलिमात जो तक्लीफ़ पहुंचाएं मुसल्मान उन से दर गुज़र करें मुनाज़अ़त (झगड़ा) न करें। (وَقِيْلَ اِنَّ الْاٰيَةَ مَنْسُوْخَةٌ بِاٰيَةِ الْقِتَالِ)। **शाने नुज़ूल :** इस आयत की शाने नुज़ूल में कई क़ौल हैं : **एक** येह कि ग़ज़्वए बनी मुस्त़लिक़ में मुसल्मान बीरे मुरैसीअ़ पर उतरे, येह एक कूंवां था, अ़ब्दुल्लाह बिन उबय मुनाफ़िक़ ने अपने ग़ुलाम को पानी के लिये भेजा, वोह देर में आया तो उस से सबब दरयाफ़्त किया, उस ने कहा कि ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه कूंएं के कनारे पर बैठे थे, जब तक नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم की और ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه की मश्कें न भर गईं उस वक़्त तक उन्हों ने किसी को पानी भरने न दिया। येह सुन कर उस बद बख़्त ने इन ह़ज़रात की शान में गुस्ताख़ाना कलिमे कहे। ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को इस की ख़बर हुई तो आप तलवार ले कर तय्यार हुए, इस पर येह आयत नाज़िल हुई। इस तक़्दीर पर आयत मदनी होगी। मुक़ातिल का क़ौल है कि क़बीलए बनी ग़िफ़ार के एक शख़्स ने मक्कए मुकर्रमा में ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه को गाली दी तो आप ने उस को पकड़ने का इरादा किया इस पर येह आयत नाज़िल हुई और **एक** क़ौल येह है कि जब आयत "مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا" नाज़िल हुई तो फ़िन्ह़ास यहूदी ने कहा कि मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم) का रब मोह़ताज हो गया (مَعَاذَ اللّٰه تَعَالٰی) इस को सुन कर ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه ने तलवार खींची और उस की तलाश में निकले। ह़ुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم ने आदमी भेज कर उन्हें वापस बुलवा लिया। **18 :** या'नी उन के आ'माल का। **19 :** नेकी और बदी का सवाब और अ़ज़ाब उस के करने वाले पर है। **20 :** वोह नेकों और बदों को उन के आ'माल की जज़ा देगा। **21 :** या'नी तौरैत **22 :** उन में ब कसरत अम्बिया पैदा कर के। **23 :** ह़लाल कशाइश के साथ फ़िरऔ़न और उस की क़ौम के अम्वाल व दियार का मालिक कर के और मन्न व सल्वा नाज़िल फ़रमा कर। **24 :** या'नी अम्रे दीन और बयाने ह़लाल

www.dawateislami.net

اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْیًۢا بَیْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ

मगर बा'द इस के कि इल्म उन के पास आ चुका[26] आपस के ह़सद से[27] बेशक तुम्हारा रब क़ियामत के दिन

یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿۱۷﴾ ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰی شَرِیْعَةٍ

उन में फ़ैसला कर देगा जिस बात में इख़्तिलाफ़ करते हैं फिर हम ने इस काम के[28]

مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَ لَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِیْنَ لَا یَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸﴾ اِنَّهُمْ

उ़म्दा रास्ते पर तुम्हें किया[29] तो इसी राह चलो और नादानों की ख़्वाहिशों का साथ न दो[30] बेशक वोह

لَنْ یُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَیْـًٔا ؕ وَ اِنَّ الظّٰلِمِیْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِیَآءُ

अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हें कुछ काम न देंगे और बेशक ज़ालिम एक दूसरे के

بَعْضٍ ۚ وَ اللّٰهُ وَلِیُّ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۱۹﴾ هٰذَا بَصَآىٕرُ لِلنَّاسِ وَ هُدًی وَّ رَحْمَةٌ

दोस्त हैं[31] और डर वालों का दोस्त अल्लाह[32] येह लोगों की आंखें खोलना है[33] और ईमान वालों के लिये

لِّقَوْمٍ یُّوْقِنُوْنَ ﴿۲۰﴾ اَمْ حَسِبَ الَّذِیْنَ اجْتَرَحُوا السَّیِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ

हिदायत व रह़मत क्या जिन्हों ने बुराइयों का इरतिकाब किया[34] येह समझते हैं कि हम उन्हें उन

كَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْیَاهُمْ وَ مَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ

जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और अच्छे काम किये कि इन की उन की ज़िन्दगी और मौत बराबर हो जाए[35] क्या ही

ع ١٨ ٢ مَا یَحْكُمُوْنَ ﴿۲۱﴾ ۧ وَ خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَ لِتُجْزٰی

बुरा हुक्म लगाते हैं[36] और अल्लाह ने आस्मानों और ज़मीन को ह़क़ के साथ बनाया[37] और इस लिये कि

व ह़राम और सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم के मब्ऊ़स होने की **25 :** हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की बि'सत में। **26 :** और इल्म ज़वाले इख़्तिलाफ़ का सबब होता है और यहां उन लोगों के लिये इख़्तिलाफ़ का सबब हुवा, इस का बाइ़स येह है कि इल्म उन का मक़्सूद न था बल्कि मक़्सूद उन का जाह व रियासत की त़लब थी, इसी लिये उन्हों ने इख़्तिलाफ़ किया। **27 :** कि उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم की जल्वा अफ़्रोज़ी के बा'द अपने जाह व रियासत के अन्देशे से आप के साथ ह़सद और दुश्मनी की और काफ़िर हो गए। **28 :** या'नी दीन के **29 :** ऐ ह़बीबे ख़ुदा मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم **30 :** या'नी रुअसाए क़ुरैश की जो अपने दीन की दा'वत देते हैं। **31 :** सिर्फ़ दुन्या में और आख़िरत में उन का कोई दोस्त नहीं। **32 :** दुन्या में भी और आख़िरत में भी। डर वालों से मुराद मोमिनीन हैं और आगे क़ुरआने पाक की निस्बत इर्शाद होता है **33 :** कि इस से उन्हें उमूरे दीन में बीनाई ह़ासिल होती है। **34 :** कुफ़्र व मआ़सी का **35 :** या'नी ईमानदारों और काफ़िरों की मौत व ह़यात बराबर हो जाए, ऐसा हरगिज़ नहीं होगा क्यूं कि ईमानदार ज़िन्दगी में त़ाअ़त पर क़ाइम रहे और काफ़िर बदियों में डूबे रहे तो इन दोनों की ज़िन्दगी बराबर न हुई, ऐसे ही मौत भी यक्सां नहीं कि मोमिन की मौत बिशारत व रह़मत व करामत पर होती है और काफ़िर की रह़मत से मायूसी और नदामत पर। **शाने नुज़ूल :** मुश्रिकीने मक्का की एक जमाअ़त ने मुसल्मानों से कहा था : अगर तुम्हारी बात ह़क़ हो और मरने के बा'द उठना हो तो भी हम ही अफ़्ज़ल रहेंगे जैसा कि दुन्या में हम तुम से बेहतर रहे। उन के रद में येह आयत नाज़िल हुई। **36 :** मुख़ालिफ़ सरकश, मुख़्लिस फ़रमां बरदार के बराबर कैसे हो सकता है ? मोमिनीन जन्नाते आ़लियात में इ़ज़्ज़तो करामत और ऐ़शो राह़त पाएंगे और कुफ़्फ़ार अस्फ़लुस्साफ़िलीन में ज़िल्लत व इहानत के साथ सख़्त तरीन अ़ज़ाब में मुब्तला

www.dawateislami.net

كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾ اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ
हर जान अपने किये का बदला पाए[38] और उन पर जु़ल्म न होगा भला देखो तो वोह जिस ने अपनी ख़्वाहिश
اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ
को अपना खु़दा ठहरा लिया[39] और अल्लाह ने उसे बा वस्फ़ इल्म के गुमराह किया[40] और उस के कान और दिल पर मोहर लगा दी और उस की
عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾ وَ
आंखों पर पर्दा डाला[41] तो अल्लाह के बा'द उसे कौन राह दिखाए तो क्या तुम ध्यान नहीं करते और
قَالُوْا مَا هِیَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَاۤ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ
बोले[42] वोह तो नहीं मगर येही हमारी दुन्या की ज़िन्दगी[43] मरते हैं और जीते हैं[44] और हमें हलाक नहीं करता मगर ज़माना[45]
وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾ وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ
और उन्हें इस का इल्म नहीं[46] वोह तो निरे गुमान दौड़ाते हैं[47] और जब उन पर हमारी रोशन
اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ
आयतें पढ़ी जाएं[48] तो बस उन की हुज्जत येही होती है कि कहते हैं हमारे बाप दादा को ले आओ[49] तुम अगर
صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾ قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ
सच्चे हो[50] तुम फ़रमाओ अल्लाह तुम्हें जिलाता है[51] फिर तुम को मारेगा[52] फिर तुम सब को इकठ्ठा करेगा[53] क़ियामत

होंगे। **37 :** कि उस की कु़दरत व वहदानिय्यत की दलील हो। **38 :** नेक नेकी का और बद, बदी का। इस आयत से मा'लूम हुवा कि इस आ़लम की पैदाइश से इज़्हारे अ़द्ल व रह़मत मक़्सूद है और येह पूरी त़रह़ क़ियामत ही में हो सकता है कि अहले ह़क़ और अहले बात़िल में इम्तियाज़े कामिल हो, मोमिने मुख़्लिस दरजाते जन्नत में हों और काफ़िर ना फ़रमान दरकाते जहन्नम (दोज़ख़ के त़बक़ात) में। **39 :** और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ़ हो गया, जिसे नफ़्स ने चाहा पूजने लगा, मुश्रिकीन का येही ह़ाल था कि वोह पथ्थर और सोने और चांदी वग़ैरा को पूजते थे, जब कोई चीज़ उन्हें पहली चीज़ से अच्छी मा'लूम होती थी तो पहली को तोड़ देते फेंक देते दूसरी को पूजने लगते। **40 :** कि इस गुमराह ने ह़क़ को जान पहचान कर बे राही इख़्तियार की। मुफ़स्सिरीन ने इस के येह मा'ना भी बयान किये हैं कि अल्लाह तआ़ला ने इस के अन्जामे कार और इस के शक़ी होने को जानते हुए इसे गुमराह किया या'नी अल्लाह तआ़ला पहले से जानता था कि येह अपने इख़्तियार से राहे ह़क़ से मुन्ह़रिफ़ होगा और गुमराही इख़्तियार करेगा। **41 :** तो उस ने हिदायत व मौइज़त (नसीह़त) को न सुना और न समझा और राहे ह़क़ को न देखा। **42 :** मुन्किरीने बअ़्स **43 :** या'नी इस ज़िन्दगी के इलावा और कोई ज़िन्दगी नहीं। **44 :** या'नी बा'ज़े मरते हैं और बा'ज़े पैदा होते हैं। **45 :** या'नी रोज़ो शब का दौरा, वोह इसी को मुअस्सिर ए'तिक़ाद करते थे और मलकुल मौत का और ब हुक्मे इलाही रूहें क़ब्ज़ किये जाने का इन्कार करते थे और हर एक ह़ादिसे को दहर और ज़माने की त़रफ़ मन्सूब करते थे अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है : **46 :** या'नी वोह येह बात बे इल्मी से कहते हैं। **47 :** ख़िलाफ़े वाके़अ़। **मस्अला :** ह़वादिस को ज़माने की त़रफ़ निस्बत करना और ना गवार ह़वादिस रूनुमा होने से ज़माने को बुरा कहना मम्नूअ़ है, अह़ादीस में इस की मुमानअ़त आई है। **48 :** या'नी कु़रआने पाक की आयतें जिन में अल्लाह तआ़ला के बअ़्से बा'दल मौत पर क़ादिर होने की दलीलें मज़्कूर हैं, जब कुफ़्फ़ार उन के जवाब से आ़जिज़ होते हैं **49 :** ज़िन्दा कर के **50 :** इस बात में कि मुर्दे ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे। **51 :** दुन्या में बा'द इस के कि तुम बेजान नुत़्फ़ा थे। **52 :** तुम्हारी उ़म्रें पूरी होने के वक़्त। **53 :** ज़िन्दा कर के। तो जो परवर्दगार ऐसी कु़दरत वाला है वोह तुम्हारे बाप दादा के ज़िन्दा करने पर भी बिल यक़ीन क़ादिर है, वोह सब को ज़िन्दा करेगा।

ع ٣/٥ ١٩
الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۶﴾ وَ لِلّٰهِ مُلْكُ
के दिन जिस में कोई शक नहीं लेकिन बहुत आदमी नहीं जानते[54] और अल्लाह ही के लिये है

السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ وَ يَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ
आस्मानों और ज़मीन की सल्तनत और जिस दिन क़ियामत क़ाइम होगी बातिल वालों की उस

الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۲۷﴾ وَ تَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰۤى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ
दिन हार है[55] और तुम हर गुरौह[56] को देखोगे ज़ानू के बल गिरे हुए हर गुरौह अपने नामए आ'माल की त़रफ़ बुलाया जाएगा[57]

اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۸﴾ هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ
आज तुम्हें तुम्हारे किये का बदला दिया जाएगा हमारा येह नविश्ता तुम पर हक़्

بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۲۹﴾ فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
बोलता है हम लिखते रहे थे[58] जो तुम ने किया तो वोह जो ईमान लाए

وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
और अच्छे काम किये उन का रब उन्हें अपनी रह़मत में लेगा[59] येही खुली

الْمُبِيْنُ ﴿۳۰﴾ وَ اَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
काम्याबी है और जो काफ़िर हुए उन से फ़रमाया जाएगा क्या न था कि मेरी आयतें पढ़ी जाती थीं

فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
तो तुम तकब्बुर करते थे[60] और तुम मुजरिम लोग थे और जब कहा जाता बेशक अल्लाह का वा'दा[61] सच्चा है

وَّ السَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا
और क़ियामत में शक नहीं[62] तुम कहते हम नहीं जानते क़ियामत क्या चीज़ है हमें तो यूंही कुछ गुमान सा

ظَنًّا وَّ مَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿۳۲﴾ وَ بَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَ حَاقَ بِهِمْ
होता है और हमें[63] यक़ीन नहीं और उन पर खुल गईं[64] उन के कामों की बुराइयां[65] और उन्हें घेर लिया

54 : इस को कि अल्लाह तआ़ला मुर्दों को ज़िन्दा करने पर क़ादिर है और उन का न जानना दलाइल की त़रफ़ मुल्तफ़ित न होने और ग़ौर न करने के बाइ़स है। 55 : या'नी उस दिन काफ़िरों का टोटे में होना ज़ाहिर होगा। 56 : या'नी हर दीन वाले 57 : और फ़रमाया जाएगा 58 : या'नी हम ने फ़िरिश्तों को तुम्हारे अ़मल लिखने का हुक्म दिया था 59 : जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा। 60 : और उन पर ईमान न लाते थे। 61 : मुर्दों को ज़िन्दा करने का 62 : वो ज़रूर आएगी तो 63 : क़ियामत के आने का 64 : या'नी कुफ़्फ़ार पर आख़िरत में 65 : जो

www.dawateislami.net

مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ قِیْلَ الْیَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِیْتُمْ لِقَآءَ

उस अ़ज़ाब ने जिस की हंसी बनाते थे और फ़रमाया जाएगा आज हम तुम्हें छोड़ देंगे[66] जैसे तुम अपने इस दिन के मिलने को

یَوْمِكُمْ هٰذَا وَ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَ مَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِیْنَ ﴿۳۴﴾ ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ

भूले हुए थे[67] और तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा कोई मददगार नहीं[68] येह इस लिये कि तुम

اتَّخَذْتُمْ اٰیٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّ غَرَّتْكُمُ الْحَیٰوةُ الدُّنْیَا ۚ فَالْیَوْمَ لَا یُخْرَجُوْنَ

ने अल्लाह की आयतों का ठठ्ठा (मज़ाक़) बनाया और दुन्या की ज़िन्दगी ने तुम्हें फ़रेब दिया[69] तो आज न वोह आग से निकाले

مِنْهَا وَ لَا هُمْ یُسْتَعْتَبُوْنَ ﴿۳۵﴾ فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَ رَبِّ

जाएं और न उन से कोई मनाना चाहे[70] तो अल्लाह ही के लिये सब ख़ूबियां हैं आस्मानों का रब और ज़मीन

الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۶﴾ وَ لَهُ الْكِبْرِیَآءُ فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۪

का रब और सारे जहां का रब और उसी के लिये बड़ाई है आस्मानों और ज़मीन में

وَ هُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿۳۷﴾ ع

और वोही इ़ज़्ज़त व हिक्मत वाला है

رکوع ۴

उन्हों ने दुन्या में किये थे और उन की सज़ाएं। **66 :** अ़ज़ाबे दोज़ख़ में **67 :** कि ईमान व ताअ़त छोड़ बैठे। **68 :** जो तुम्हें इस अ़ज़ाब से बचा सके। **69 :** कि तुम उस के मफ़्तूं (फ़ितने में मुब्तला) हो गए और तुम ने बअ़्स व हिसाब का इन्कार कर दिया। **70 :** या'नी अब उन से येह भी मत़्लूब नहीं कि वोह तौबा कर के और ईमान व ताअ़त इख़्तियार कर के अपने रब को राज़ी करें क्यूं कि उस रोज़ कोई उ़ज़्र और तौबा क़बूल नहीं।

www.dawateislami.net